बच्चों का अपना अखबार

गुब्बारा

वर्ष-2, अंक-9, जनवरी-मार्च 2014

बाल विवाह मुक्त चूंधी गांव

जैसलमेर के चूंधी गांव ने पूरे देश को एक नई प्रेरणा दी है। गांव ने यह संकल्प लिया कि अब गांव में बाल विवाह नहीं होने देंगे। जिला कलक्टर एल.एन. मीना, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद बलदेव सिंह उज्जवल सहित स्वास्थ्य, शिक्षा, समाज कल्याण और महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारियों ने इस फैसले का पूरी तरह से समर्थन और बाल विवाह रोकने के लिए हरसंभव मदद का वादा किया। इस मौके पर यूनीसेफ से आईं सुलग्ना राय ने चूंधी के इस फैसले को बालिका विकास में लाभकारी बताते हुए बालिकाओं को उच्च शिक्षा से जोड़ने की बात कही।

GIRLS NOT BRIDES
The Global Partnership to End Child Marriage

भाया 21 रो छोरा 18 री छोरी को ब्याह सही है

बात है जाणी पिछाणी, जद हुई घणी खींचा ताणी
पीठी रगड़ी गीत गाया, माथे पर धर दीणी पगड़ी
पछे आई घोड़ी एक, कर दियो मनै बी पे पैक
सगला होग्या म्हारे लारै, मनै बोल्या तोरण मार
मैं सोच्यो आपां कदे न कीड़ी मारी, तोरण मारणो पड सी भारी
इत्तीक ताल में एक जणे म्हारै हाथ में एक तलवार दी
और दूजेड़ै नै पकड़, तोरण के मार दी
लुगायां गावण लागी, मैं रोवण लाग्यो, उतर घोड़ी सूं पाछो भाग्यो
पकड़ म्हानै लाया मांय बिठा दियो, साथ मैं एक छोरी को हाथ म्हारै हाथ मैं दे दियो
मैं सोच्यो कोई पंजो लड़ाणो है कांई चक्कर, पर आ तो गौर ही कोनी करै, ओ के चक्कर है
फेर सोच्यो छोरी सू पंजो लडायो इमें कोई चाल है, मरोड़ पंजो पूछ्यो और कांई हाल है
छोरी रोवण लागी, बोली मां मेरो हाथ मरोड दियो, मां बोली बेटी कीं भी हो ज्यावे पर हाथ ना छोड दियो
थोडीक देर मै म्हानै नींद आगी, काको बोल्यो उठ बेटा फेरा खाले, "मैं बोल्यो" मै तो ज्योड़ा हं तू खाले
बीकी काकी म्हारो काको दोनू ही म्हानै फेरा खवाया, म्हां दोनां नै कोनी जगाया
लुगायां कोमलड़ी गावंण लागी, मैं जाग्यो बा बी जागी
जणा म्हैं घरां आयो, छोरी म्हारे लारे आई, मैं बीनै पूछ्यो तू म्हारौं पीछो क्यूं करै है बाई
लोग बोल्या बावला आ है थारी लुगाई, थोडेक दिन मैं मां बोली बेटा बींदणी को पग है भारी
मैं सोच्यो आ काईं लागोगी नई बीमारी
कोई आर म्हाने भी कैयो, भाया थारो ब्याह होग्यो, पर मै थाने पूछूं यो के न्याय होयो है
म्हारी दोनां री जिंदगी रो काई होयो है
भाया 21 रो छोरा 18 री छोरी को ब्याह सही है
ब्यांव करणो गुड्डा गुड्डी रो खेल नहीं है. . . .

बाल विवाह पर एक बच्चे के मन की बात को उजागर करती इस कविता को लिखा है किशोर मंच के सदस्य राजकुमार ने। हदां गांव का रहने वाला राजकुमार आठवीं कक्षा का छात्र है। राजकुमार कहता है, "मेरे गांव और आसपास बाल विवाह होने का सुनने पर मेरे मन में यह कविता लिखने की बात आई। गुब्बारा में प्रकाशित होने पर इसे ज्यादा से ज्यादा साथी पढ़ेंगे और बाल विवाह के दुष्प्रभावों के बारे में जानेंगे।"

शाला प्रबंधन समिति सदस्य छात्र की पहल पर

बन गई पानी की टंकी

विद्यालय के विकास के लिए सभी विद्यालयों में शाला प्रबंधन समिति के गठन की बात शिक्षा के अधिकार कानून में की गई है। इन शाला प्रबंधन समितियों द्वारा कई विद्यालयों में विद्यार्थियों के समक्ष आने वाली समस्याओं को बेहतर तरीके से सुलझाया गया है। ऐसा ही एक किस्सा डण्डकलां गांव का भी है।

आठवीं कक्षा में पढ़ने वाला नैनूराम शाला प्रबंधन समिति का सदस्य है। नैनूराम ने देखा कि विद्यालय में पीने के पानी की समस्या है। विद्यालय में पानी तो है लेकिन उसे पीने के लिए कुण्ड से निकालना पड़ता था। मटका सभी बच्चों के लिए पर्याप्त नहीं था। आठवीं और सातवीं कक्षा के विद्यार्थी तो पानी खींच कर पी लेते थे, लेकिन छोटे बच्चों को पानी पीने में काफी परेशानी होती थी। शाला प्रबंधन समिति की मासिक बैठक में नैनूराम ने यह बात समिति के सभी सदस्यों को बताई। इस पर सभी सदस्यों ने बात की। बैठक में पानी की टंकी के निर्माण की बात तय हुई। अब सभी सदस्यों ने अपने-अपने तरीके से टंकी बनाने की बात रखी। किसी ने कहा कि टंकी को छत पर बनाया जाए, तो किसी ने बड़ी टंकी बनाने को कहा।

हेडमास्टर जी सबकी बाते सुन रहे थे। अंत में उन्होंने नैनूराम से पूछा कि टंकी कैसी और कहां होनी चाहिए। नैनूराम ने हेडमास्टर जी से एक दिन का समय मांगा। नैनूराम तुरंत अपने समूह में आया और इस पर बात की। इसके बाद सबके सुझावों को इकट्ठा करके टंकी का चित्र बनाया गया। यह चित्र हेडमास्टर जी को दिया गया। जिसके बाद आज विद्यालय में टंकी का निर्माण हो गया। इस टंकी के आसपास साफ-सफाई रहे इसका जिम्मा बाल समूह ने लिया है। अब विद्यालय में पेय जल की समस्या समाप्त हो गई है।

चली-चली बच्चों की टोली करने अधिकारों की बात

किशोरी प्रेरणा मंच और किशोर मंच के सदस्यों ने बाल अधिकारों पर अपने द्वारा तैयार किए गए नाटकों को प्रदर्शित किया। उनके नाटकों को देखकर वहां मौजूद दर्शकों ने खूब तालियां बजाईं। इन सभी सदस्यों को चिमाणा में नाटक कार्यशाला में प्रशिक्षण दिया गया था।

इन नाटकों को तैयार करने के लिए खुद सदस्यों ने अपने को दो समूहों में बांट लिया। किशोरी प्रेरणा मंच की टीम ने बालिका शिक्षा पर नाटक करने का तय किया। वहीं दूसरी तरफ किशोर मंच की टीम पूरा एक दिन सोचती रही कि आखिर किस विषय पर नाटक किया जाए। फिर दूसरे दिन उन्होंने बाल यौन शोषण पर नाटक करना तय किया। यह सभी सदस्य चिमाणा व उसके आस-पास की ढ़ाणियों से आए थे। नाटक का पहला मंचन खजोड़ा गांव के एक स्कूल में किया गया। जहां करीब 400 लोगों ने बच्चों द्वारा तैयार नाटक को देखा और बच्चों के प्रयास की तारीफ की। नाटक से मिली तालियों से सदस्यों का उत्साह बढ़ा। चिमाणा गांव की सुमित्रा ने बताया कि नाटक करने से पहले झिझक थी कि कोई क्या कहेगा लेकिन जब नाटक किया तो मुझे लगा कि मैं उन लड़कियों के लिए कुछ अच्छा कर रही हूँ, जो स्कूल नहीं जाती।

नैणियां और गडियाला गांव के बच्चों ने लिया जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में भाग
हुए रूबरू साहित्य और साहित्यकारों से

जयपुर के डिग्गी पैलेस में साहित्य और साहित्यकारों का एक समागम हुआ। यह समागम था जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल। इसमें उरमूल सीमांत का भी आमंत्रित किया गया। गड़ियाला गांव के हरीश, श्याम सुंदर, हिरेश और नैणियां गांव के गणेश और राजूराम को भी इस सम्मेलन में जाने का मौका मिला।

गड़ियाला गांव के हरीश कुमार ने बताया ''जब मैं गांव से जयपुर के लिए रवाना हुआ तो मेरे मन में बहुत से सवाल थे, कि लिटरेचर फेस्टिवल कैसा होगा, वहां क्या होगा। मैं पहली बार गांव से इतनी दूर आया। मैं वहां जाकर नए लोगों से मिला। दिल्ली, चंडीगढ़, जयपुर, जोधपुर के स्कूलों से आए बच्चों से भी मिला। लिटरेचर फेस्टिवल मुझे किताबों की दुनिया की तरह लगा। वहां बहुत सारे किताबों के स्टॉल लगे थे। बिना किसी रोक-टोक के हम कोई भी किताब देख सकते थे, पढ़ सकते थे। मुझे बहुत अच्छा लगा जब कई बड़े लोग भी हमसे आकर बातें कर रहे थे। यहां हमने लेखकों की चर्चा में भी भाग लिया। मैने यह सीखा कि, किस तरह से अपने मन की बात, अपने आसपास होने वाली घटना, अपनी और दूसरों की सोच को लिखकर एक कहानी बनाई जा सकती है।''

इसी तरह से लिटरेचर फेस्टिवल में गड़ियाला गावं के श्याम सुंदर ने भी कहानी लेखन के बारे में विस्तार से जाना। श्याम सुंदर ने बताया ''मैं ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और मुझे किताबें पढ़ने का शौक है। जब मैं महोत्सव में गया तो वहां मैंने कई लेखकों, गीतकारों के बारे में जाना। वहां मैं गीतकार प्रसून जोशी, लेखक और फिल्म निर्माता विधु विनोद चोपड़ा, अभिनेता इरफान खान से मिला। हम से उन्होंने बात की और अपने अनुभव हमारे साथ बांटे। फिल्म लेखक और गीतकार प्रसून जोशी ने हमें कहानी और गीत लिखने के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कहानी किसी भी परिवेश और किसी भी व्यक्ति विशेष के संदर्भ में भी लिखी जा सकती है, लेकिन उसे लिखने का तरीका आना चाहिए। कहानी ऐसी हो जिसे एक बार कोई पढ़ना शुरू करे तो पूरी पढ़ता ही चला जाए। कहानी की हर पंक्ति में रोचक या कुछ नया होना चाहिए। उन्होंने हमें कहानी और गीत लिखने की शुरुआत किस तरह से की जाए इसकी जानकारी दी।''

लिख कर किया नाटक का प्रदर्शन : लिटरेचर फेस्टिवल के बारे में मुझे पहले लगा कि वहां कहानी, उपन्यास, कविताओं, गीत आदि के बारे में बताया जाएगा, लेकिन यहां आने पर मैंने देखा कि साहित्य को कई माध्यमों से समझा जा सकता है। यहां आकर मैंने समूह बनाकर नाटक किया। यहां थियेटर कार्यशाला आयोजित की गई, जहां नाटक लेखन को लेकर चर्चा की गई। जिसमें हमने अपने गांव की सबसे बड़ी समस्या बाल विवाह के बारे में बताया। हमारे समूह ने बाल विवाह पर नाटक किया। इस नाटक में हमने बताया कि, किस प्रकार बच्चों की शादी करने पर उनके विकास का रास्ता रुक जाता है। दर्शकों को नाटक बहुत पसंद आया। मैं ये नाटक अपने गांव में भी करूंगा। जिससे लोगों को जागरूक कर सकूं और बाल विवाह रोक सकूं।

गणेश, गांव-नैणियां

रेगिस्तान को संवारते ये रंग-बिरंगे फूल

रेगिस्तान के पेड-पौधों की अपनी ही एक अलग विशेषता है। बहुत ही कम पानी या कहें कि न के बराबर पानी में भी यह पेड-पौधे जीवत रहते हैं। अपने फलने-फूलने के मौसम में यह पौधे रेगिस्तान की तस्वरी ही बदल देते हैं, यही नहीं झोपडा बनाने से लेकर कृषि के औजार सहित रोजमर्रा जिंदगी के कई सामान बनाने के लिए इनकी टहनी, तना और पत्तियों को प्रयोग में लिया जाता है।
एक ओर पशुओं के लिए ये पोषक चारा हैं तो दूसरी तरफ इसके फल और फूलों से स्वादिष्ट व्यंजन भी बनाए जाते हैं। इन सबसे बढकर इन पेड-पौधों के कई औषधीय गुण भी हैं।

राजस्थान का राज्य पुष्प, रोहिडा

रेगिस्तान की तपती गर्मी हो या फिर सर्द रातें रोहिड़ा का पेड़ हर मौसम में हरा-भरा नजर आता है। इसके खूबसूरत फूल किसी को भी अपनी तरफ आकर्षित कर लेते हैं। रेत के धोरों की स्थिरता के लिए यह वृक्ष रेगिस्तान में वरदान के समान है। इसकी विशेषता और खूबसूरती के कारण ही राजस्थान सरकार ने वर्ष 1981 में रोहिड़ा के फूल को राष्ट्रीय पुष्प का दर्जा दिया।

रोहिड़ा का वानस्पतिक नाम टेकोमेला उण्डुलता है। यह रेगिस्तानी पेड़ थार मरूस्थल में पाया जाता है। शुष्क और अर्ध शुष्क क्षेत्रों में पाया जाने वाला यह वृक्ष पतझड़ी प्रकार का है। रेगिस्तान की पारिस्थितिकी के मुताबिक रोहिड़ा का पेड़ और फूल दोनों ही रेगिस्तान के लोगों, पशुओं और पर्यावरण के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।

रोहिड़ा की विशेषताएं : रोहिड़ा के पेड़ रेत के धोरों की ढलान पर लगते हैं। इसकी जड़ें इस तरह फैलती हैं कि उनके बीच में रेत इकट्‌ठा रहे। इस तरह से यह पेड़ अपने आसपास से रेत को निकलने नहीं देता जिससे रेत के धोरे स्थिर रहते हैं।

फूल : रोहिड़ा का पेड़ दिसंबर से फरवरी महीने के बीच खूबसूरत फूलों से लदा होता है। यह पेड़ तीन रंग के फूल देता है। पीला, संतरी और लाल। फूलों से लदे होने पर इस पेड़ की खूबसूरती देखते ही बनती है।

चारा और अन्य विशेषताएं : पारिस्थितिकी (जीव विज्ञान की एक शाखा) की दृष्टि से देखें तो यह पेड़ मनुष्य और जीव-जन्तु दोनों के लिए भी उपयोगी है। रेगिस्तान की तपती धूप में चिड़ियाओं के लिए रोहिड़ा के पेड़ उनका घर है। इसकी छांव में भेड़-बकरियां आराम करती हैं। बकरियों, भेड़ों और ऊंटों को इसकी पत्तियां और फूल बहुत भाते हैं। रोहिड़ा का पेड़ राजस्थान के शेखावाटी व मारवाड़ अंचल में इमारती लकड़ी का मुख्य स्रोत है। यह मारवाड़ टीक के नाम से भी जाना जाता है।

फोग : लुप्त होता राजस्थान की यह विशेष झाडी

राजस्थान में मनाये जाने वाले त्योहारों में ''गणगौर'' का एक विशेष दर्जा है। चैत्र (मार्च-अप्रेल) के पहले दिन से शुरू होकर 18 दिनों तक बहुत ही उत्साह से इस त्यौहार को मनाया जाता है। पूरे 18 दिन महिलाएं भगवान शिव की पत्नी ''गौरी'' की भक्ति और पूजा लोकगीतों के माध्यम से करती हैं। लकड़ी और मिट्‌टी के गौरी और शिव को बनाकर घरों में उनकी स्थापना की जाती है। गणगौर के इसी पावन समय में फोग का फूल खिलता है। फोग के फल और फूल को गणगौर पूजा में गौरी की अर्चना के लिए चढ़ाया जाता है। फोग का वानस्पतिक नाम कोलीगोनम पोलीगोनोइड्स है।

यह रेत के टीलों पर जमता और बढ़ता है। इसको बहुत ही थोड़े पानी की आवश्यकता होती है। फोग की जड़ें जमीन में गहराई तक जाती हैं, जो रेत को बांध कर रखती है। जड़ों के गहराई में होने से फोग का पेड़ पृथ्वी से नमी लेकर बढ़ता है।

स्वादिष्ट रायता : फोग के बीज को छाछ में मिलाकर उसका रायता बनाया जाता है। यह बहुत ही स्वादिष्ट और शरीर के लिए पौष्टिक होता है। फोग के बीजों को राजस्थानी में "फोगलिक" कहा जाता है।

चारा और अन्य विशेषताएं : इसके छोटे, एक समान पत्ते बारिश के बाद दिखाई देते हैं, जो बारिश के मौसम के बाद भूरे रंग की झाड़ी में तब्दील हो जाते हैं। गाय, बकरी, भेड़ और ऊंट को इसके पत्ते बहुत भाते हैं। पत्तों को सुखाकर चारे के तौर पर भी काम में लिया जाता है। फोग की झाड़ झोपड़ा बनाने के काम में भी आती है। इसकी टहनियों और तने को झोपड़े का छपरा बनाने के काम में लिए जाता है।

फाग का सरंक्षण : रेगिस्तान की इस पवित्र झाड़ को अब बहुत बड़ा संकट है। ऊंट गाड़ों में भरकर इन्हें चूना फैक्ट्री में ले जाया जाता है। जहां इसको भट्‌टी में जलाकर चूने के सामान बनाए जाते हैं। खेती में, टैक्टर के आने के बाद फोग को और भी संकट हो गया है। जमीन को समतल करते समय इसकी जड़ों को टैक्टर द्वारा खराब कर दिया जाता है। इस तरह से फोग अब कम होता जा रहा है। निकट भविष्य में फोग के अस्तित्व का संकट है। इसलिए जरूरी है कि इसका संरक्षण किया जाए।

कैर : औषधी गुणों से निरोगी बनाए कैर

कैर-सांगरी की सब्जी राजस्थानी भोजन की पहचान है। भोजन में अगर यह मिल जाए तो भोजन और भी स्वादभर और मजेदार हो जाता है। स्वाद के साथ-साथ कैर में कई औषधीय गुण भी पाए जाते हैं। इसलिए कैर का पेड़ राजस्थान के समुदाय और पर्यावरण दोनों में ही एक विशेष स्थान रखता है।

कैर का पेड़ बिन पत्तियों या यह कहें कि कटीली लंबी झाड़ वाला छोटा पेड़ होता है। जिसमें मार्च से जून और सितंबर से दिसंबर के महीने में फल और फूल लगते हैं। इसके खूबसूरत लाल और लाल-संतरी फूल पक जाने पर फल देते हैं। सांगरी-कैर और कूमत-कैर की सब्जी राजस्थान के प्रसिद्ध व्यंजन है।

इसके अलावा कैर का अचार भी बनाया जाता है। पूरे भारत और विदेश में भी कैर का अचार प्रसिद्ध है। आदिवासी कैर के पक्के फल को खाते हैं। . . . शेष पृष्ठ 6 पर

बाल विवाह रोकने का लिया संकल्प

महिलाएं और पुरुष में कोई भेद न हो। महिलाओं पर हिंसा न हो, किसी तरह की पाबंदी न हो। पूरी दुनिया को, महिलाओं के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए 14 फरवरी को "वन बिलयन राइजिंग " यानी 100 करोड़ के साथ जागो अभियान दिवस मनाया जाता है।

कोलायत के बीठनोक, चारणवाला, दियातरा, झझू, सियाणा, गोकुल, भेलू, चिमाणा और गड़ियाला पंचायत के गांवों की किशोरी प्रेरणा मंच की सदस्यों ने अपने विद्यालय में इस दिन कई कार्यक्रम किए। बाल विवाह पर अपने मन की बातों को रखा। बाल विवाह से होने वाले नुकसान, पढ़ाई छूट जाना, जल्दी मां बन जाना जैसी बातों से कार्यक्रम में आए गांव के लोगों को चेताया। इस मौके पर बालिकाओं ने बाल विवाह के दुष्प्रभावों को बताता हुए एक नाटक भी प्रस्तुत किया। नाटक के माध्यम से उन्होंने कार्यक्रम में आए गांव के लोगों से निवेदन किया कि, वे अपनी बेटों की शादी 21 वर्ष व बेटियों की शादी 18 वर्ष की आयु के बाद ही करें। कार्यक्रम में मौजूद सभी बालिकाओं ने बाल विवाह का विरोध करने का संकल्प लिया। बालिकाओं ने यह भी कहा कि, वे बाल विवाह का पता चलते ही तुरंत इसकी सूचना सभी अधिकारियों, पुलिस और चाइल्डलाइन-1098 को देंगी। संकल्प लेने वालों में शिक्षक और समुदाय के लोग भी शामिल रहे।

पृष्ठ 5 का शेष. . .

दीमक रोधी केर : कैर की झाड़ को झोपड़े का छप्पर बनाने के काम में लिया जाता है। इसके झाड़ से घर की सजावट के सामान और रोजमर्रा की वस्तुओं को भी बनाया जाता है। खेती के औजार जैसे हल और जुए में कैर की लकड़ी का प्रयोग होता है, क्योंकि इसमें दीमक नहीं लगता है।

अकाल का संकेत : भील और आदिवासी जातियों का यह मानना है कि, कैर में बेमौसम फूल निकल जाना बहुत ही बुरा संकेत है। ऐसा मानना है कि, बेमौसम फूल भीषण अकाल का संकेत है।

रेगिस्तान का डॉक्टर : कैर के औषधी गुण उसे विशेष पेड़ का दर्जा देते हैं। कैर की टहनियों को चबाने से दांत दर्द से तुरंत राहत तो मिलती ही है, मसूड़े भी मजबूत होते हैं। रेगिस्तान में रहने वाली भील जातियां तो टहनियों को पानी में उबाल, पानी का सेवन करती है। इससे अस्थमा और खांसी समाप्त हो जाती है। मियादी बुखार, सूजन और गठिया जैसे रोगों को कम करने के लिए भी कैर की जड़ों को पानी में उबाल कर, उस पानी का सेवन किया जाता है। बाडमेर और जैसलमेर इलाके के वैद्य तो दिल की बीमारियों से निजात पाने के लिए केर के फल का सेवन करने की सलाह देते हैं। इसकी जड़ों के पास जमा हुई रेत को निकालकर गर्म किया जाता है, फिर इस रेत को छाछ में मिलाकर शरीर पर लगाया जाता है। इससे शरीर का दर्द तो कम होता ही है साथ ही सूजन भी खत्म हो जाती है। डूंगरपूर जिले में तो केर की टहनियों को जलाकर उसकी भस्म का सेवन किया जाता है। यह इलाज हड्डियों को जोड़ने और मजबूत करने में मदद देता है।

और बन गई "बच्चों की सरकार"

उत्तराखण्ड के राज्यपाल डॉ. अजीज कुरैशी (मध्य में) के साथ बाल विधायक

पूरे देश में चुनावी हलचल है। राज्य सरकार के बाद अब केन्द्र सरकार के गठन के लिए चुनाव जारी हैं। इसी बीच एक ऐसी भी सरकार बन गई है जो बच्चों की सरकार है। बच्चों की इस सरकार में राज्य सरकार की तरह ही मुख्यमंत्री, गृह मंत्री, शिक्षा मंत्री, समाज कल्याण मंत्री, श्रम मंत्री, आपदा प्रबंधन मंत्री सहित पूरा मंत्री मण्डल है। इस सरकार का गठन हुआ है उत्तर भारत के राज्य उत्तराखण्ड में।

राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग, उत्तराखण्ड ने इस गणतंत्र दिवस के अवसर पर राज्य में बाल विधानसभा के गठन का आयोजन किया। पहली बार आयोजित हो रही बाल विधानसभा से पहले बाल विधायकों ने शनिवार को विधानसभा अध्यक्ष व नेता प्रतिपक्ष के साथ ही बाल सरकार भी चुन ली।

उरमूल सीमांत समिति की तरह ही उत्तराखण्ड के गांवों में कार्य कर रही संस्थाओं ने अपने स्तर पर बाल फैडरेशन के तहत चुनाव करके उस फैडरेशन के अध्यक्ष का नियुक्त किया। यही फेडरेशन अध्यक्ष विधानसभा में विधायक के पद पर आए। 70 बाल विधायकों में सत्ता पक्ष के विधायकों ने अपने नेता सदन यानी मुख्यमंत्री के रूप में संदीप पंत का चुनाव किया। इसी तरह विधानसभा अध्यक्ष के तौर पर आदित्य वर्मा का चुनाव भी किया गया। बाल विधानसभा ने गठन के तुरंत बाद बच्चों से जुड़ी समस्याओं पर एक प्रस्ताव बनाकर उसे पारित किया।

यह है बच्चों की सरकार : मुख्यमंत्री-संदीप पंत, गृह मंत्री-पंकज सिंह नेगी, शिक्षामंत्री-सूर्य प्रताप सिंह, समाज कल्याण मंत्री-दिशा भट्ट, श्रम मंत्री-ज्ञान बाबू और आपदा प्रबंधन मंत्री- करम जीत सिंह।

क्या करती है बच्चों की यह सरकार : बच्चों की यह सरकार राज्य में बच्चों के अधिकारों से संबंधित सभी मुद्दों पर कार्य करती है। सभी कार्यों के करने का तरीका भी उसी तरह से है जिस तरह से सरकार द्वारा किया जाता है। यह बाल सरकार बच्चों के अधिकार सुनिश्चित करने के लिए आदेश भी जारी करती है। हाल ही में परीक्षा के दौरान कई विद्यालय प्रयोगात्मक परीक्षा (प्रैक्टिकल एग्जाम) के लिए विशेष परीक्षा शुल्क छात्रों से लेते थे। प्रयोगात्मक परीक्षा शुल्क पर प्रतिबंध लगाने के लिए बाल विधानसभा के शिक्षा मंत्री सूर्य प्रताप सिंह ने आदेश पारित किया कि इस तरह का शुल्क लेना गलत है। आदेश को शिक्षा अधिकारियों ने स्वीकार किया और तुरंत ही सभी विद्यालयों को आदेश दे दिए गए कि किसी भी तरह का प्रयोगात्मक परीक्षा शुल्क न लिया जाए।

इसी तरह से बाल श्रम मंत्री द्वारा राज्य में बाल मजदूरी को समाप्त करने के लिए आदेश पारित किया गया। इस आदेश को उत्तराखण्ड के श्रम विभाग ने गंभीरता से लेते हुए अपनी कार्यवाही भी शुरू कर दी है।

सीखा कंप्यूटर और बन गई 'डिजिटल मूमल'

पश्चिमी राजस्थान में कृषि एवम् पशुपालन ही लोगों की आजीविका का प्रमुख साधन है। बच्चों को स्कूल छुड़वाकर पशु चराने भेज देना और 12 से 13 साल के बीच में बेटी की शादी कर देना इस इलाके में आम बात है। पानी की अत्याधिक कमी के बावजूद अधिकांश लोग कृषि पर ही निर्भर हैं। पश्चिमी राजस्थान में भौगोलिक विषमताओं के साथ सामाजिक विषमताएं भी कम नहीं हैं, बेटियों को विद्यालय भेजने की बजाय घर का काम और खेती का काम करवाना यहां ज्यादा उचित समझा जाता है।

इन्हीं परिस्थितियों का सामना करते हुए दसवीं पास करके मूमल ने वो गौरव हासिल कर लिया जो आज तक उसके परिवार की किसी भी लड़की ने नहीं किया था। मूमल बताती है कि, ''बज्जू में राईका समाज के लगभग 50 से 60 परिवार रहते हैं। इन सभी परिवारों में, मैं ही एकमात्र ऐसी लड़की हूँ जिसने प्रथम श्रेणी में दसवीं कक्षा पास की है और अब कंप्यूटर सीख रही हूँ।''

मूमल के माता-पिता बिल्कुल अनपढ़ हैं, तथा खेती करके परिवार का गुजारा करते हैं। वर्तमान में मूमल ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ रही है। इतिहास और राजनीति विषय के साथ अभी से मूमल ने प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी भी शुरू कर दी है। अपने विद्यालय में कम्प्यूटर देखकर मूमल ने सोचा था कि वह भी कम्प्यूटर सीख लेगी, लेकिन 2 साल बीत गए कभी वो दिन ही नहीं आया जब मूमल को विद्यालय में कम्प्यूटर चलाने को मिला हो। विद्यालय में कम्प्यूटर तो है परन्तु कम्प्यूटर शिक्षक आज भी उपलब्ध नहीं है।

उरमूल सीमांत समिति के कार्यकर्ताओं ने मूमल के विद्यालय में 'कम्प्यूटर शिक्षा और आज का युग' पर एक सत्र आयोजित किया। इसी सत्र के माध्यम से मूमल एवम् उसके जैसे अन्य विद्यार्थियों को पहली बार पता चला कि उनके गांव में भी कम्प्यूटर सीखने की सुविधा है। बस फिर क्या था, अगले ही दिन मूमल ने अपने छोटे भाई और बहन के साथ उरमूल में चलाये जा रहे RKCL के RS-CIT कोर्स में दाखिला ले लिया। यहीं से शुरू हुआ 'डिजिटल मूमल' का यह सफर।

माइक्रोसॉफ्ट पेंट, प्रोग्राम से शुरू करते हुए वर्ड, एक्सल, पावर

प्वांइट के साथ धीरे-धीरे मूमल ने इंटरनेट में रुचि दिखानी शुरु कर दी। इंटरनेट के माध्यम से किसी भी वस्तु, स्थान के बारे में जानकारी खोजना अब मूमल के लिए आसान काम है। मूमल ने खुद कम्प्यूटर सीखने के साथ-साथ अपने छोटे भाई-बहनों को भी कम्प्यूटर सिखा कर उनको भी एक दिशा दी है।

बाल विवाह बच्चों के अधिकारों का हनन और कानूनी जुर्म के साथ-साथ सामाजिक विकास में बाधक भी है।

चाइल्ड लाइन 1098 दिन-रात, निःशुल्क

बाल विवाह का पता चलते ही तुरंत चाइल्डलाइन के नंबर – 1098 पर इसकी सूचना दें। सूचना देने वाले का नाम और पता किसी को नहीं बताया जाता है।

संपादनः- विपिन उपाध्याय, रवि मिश्रा, संपादन सहयोग- रवि चतुर्वेदी
उरमूल सीमांत समिति के लिए प्लान इंडिया के सहयोग से प्रकाशित।
उरमूल सीमांत समिति-बज्जू, तहसील कोलायत, जिला-बीकानेर, राजस्थान-334305
फोनः- 01535-232034, ई-मेलः- mail@urmul.org, वेबसाइटः- www.urmul.org

URMUL SEEMANT

Plan There's a plan for every child.